— पंचम अध्याय —

"राग-दरबारी" उपन्यास में भाषा सौष्ठव और व्यंग्य"

"राग-दरबारी" उपन्यास में भाषासौष्ठव और व्यंग्य

भाषा-सौष्ठव :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास ग्रामीण-सामाजिक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। भाषा-सौंदर्य "राग-दरबारी" उपन्यास की प्राणवान विशेषता है। लखनऊ नगर के ग्रामीण अंचल शिवपालगंज की बोलचाल की भाषा के विशिष्ट शब्दों से अलंकृत "राग-दरबारी" की दिव्य आत्मा पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। उन आंचलिक शब्दों की सौंदर्य छटा अपने में सर्वथा मौलिक और नूतन है। ये शब्द-प्रयोग इस कृति को विशिष्ठ गरिमा प्रदान करने में आश्चर्यजनक रूप से सफल हुए है। स्थानीय बोली का उपन्यासों में प्रयोग आम स्तरीय पाठकों की भाव-ग्राहकता के संप्रेषण व्यापार में भले ही अवरोधक आभासित होते हो किंतु सत्यता यह है कि ये भाषागत नव्य प्रयोग केवल प्रयोग के नाम पर प्रयोग न होकर स्थान विशेष के नागरिकों की मानसिकता उद्घाटित करते है। नागरिकों की संस्कारगत चेतना को मुखरित करने में सहायक होते है। इसके बिना जन-जीवन की समग्रता का अंकन सर्वथा असंभव है।

"राग-दरबारी" की भाषा में भी आंचलिक स्वरों का प्रयोग उसकी भाषागत वैशिष्ट्य का ही सूचक है न कि भाव-सम्प्रेषण का अवरोधक तत्व। ऐसी भाषागत प्रयोग की चेतना "राग-दरबारी" के लिए सर्जनात्मक आवश्यकता बनी हुई है। श्रीलाल शुक्ल ने "राग-दरबारी" में ऐसी पैनी और धारदार व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है कि "पाठक, लेखक के उबाऊ प्रसंगो, यथार्थ के सारहीन विवरणों को भी रोचकता के साथ पढ़ा जाता है।" [१]

लेखक ने औपन्यासिक धरातल पर अनन्य नवीन प्रयोग किये है।

१) शब्दों के विशिष्ठ प्रयोग :-

"राग-दरबारी" उपन्यास में शब्दार्थों की सांकेतिकता में पात्रों की मानसिकता परस्पर गुंफित है। शब्दों के विशिष्ठ प्रयोगों से देश की वर्तमान

स्थिति को भी प्रभावशाली ढंग से अभिव्यंजित किया है। जैसे, —

" वर्तमान शिक्षा पध्दति रास्ते में पड़ी हुई कुत्तिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।" [२]

यह जुमला सम्प्रति राष्ट्र की पतनोन्मुखी शिक्षा पध्दति को उद्घाटित करता है।

रुप्पन के विषय में कि, --

" वे पैदाइशी नेता थे क्योंकि उनके बाप का नाम वैद्यजी था।" [३]

यह भावना आज की नेतानुमा छात्र-पीढ़ी का संकेत करती है।

" शिवपालगंज एक ऐसा गाँव है जहाँ --

" मूर्खता ही एक वैल्यू है।" [४]

बुध्दिमता की वहाँ प्रतिष्ठा नहीं है। वहाँ शिक्षा नहीं तिकड़मबाजी की आवश्यकता होती है। वर्तमान परिवारों के विघटित संस्कारों के संदर्भ में खानदानी श्रवणकुमार बाप पर लाठी चलाते है, सर्वत्र असंतोष की "भुनभुनाहट" सुनाई देती है। पुरे शिवपालगंज में "भोभोज" तथा "गालीभोज" ही विशिष्ठ पत्र है जिनके मध्य में ग्रामीण जिन्दगी निरन्तर फिसलती रहती है।

"राग-दरबारी" की मेलेवाली देवी की मूर्ति - किसी सिपाही की मूर्ति थी लेकिन गाँववाले उसे देवी के रूप में ही स्वीकार करते थे। संपूर्ण विसंगतियों और विद्रुपताओं को देखने से पता चलता है ... मानो --

" सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैली हुआ है।।" [५]

२) <u>मुहावरे और विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग</u> :-

"राग-दरबारी" की भाषायी गरिमा का दूसरा महत्वपूर्ण पत्र उसके मुहावरेदानी और विशिष्ठ शब्दावली का उन्मुक्त प्रयोग है जो सम्पूर्ण कथातंत्र की

सक्षमा में व्यंग्यजन्य गंभीरता का संचार करती है, इसलिए व्यंग्य का प्रहार पूरी रचना में तीक्ष्णता भर देता है। सर्वत्र मुहावरों का प्रयोग कहीं-कहीं कथा-क्रम की अबाध गति में व्यतिक्रम उपस्थित करते है। इन शब्दों के यथा प्रसंग प्रयोगों से लेखकीय प्रतिभा तो अभिव्यक्त होती ही है, इसके साथ-साथ यथार्थ के प्रत्यंकन में लेखक की पूर्णरूपेन सक्षमता भी प्रकट होती है। इस संदर्भ में पंइल, बलटुट, लिबिर-शिबिर, टिप्पस, पिंडीमार, गजहा, जुतियाघाव, बाँगड़ु, पटसाला, पुरैट, फुट्टफैरी, लासेबाज, कल्लायेगी, टिलटिला, तिड़ी-बिड़ी, चक्करगिन्नी, टाँस, लड़ास, कुकरहाव, डम्पलाही, कौड़िल्ला, कंटाप, शिल्पी आदि शब्द विचारणीय है। यदि लेखक उपन्यास के अंत में इनका अर्थोल्लेख कर देता तो पाठकीय दृष्टिसे हितकर ही होता। फिर भी इन शब्दों को पुरी रचना में इतनी कुशलता से संयोजित किये गये हैं कि, झिलमिलाते एक टंकित मोती की तरह लगते है।

<u>लोकोक्तियाँ व मुहावरे :-</u>

"राग-दरबारी" में कतिपत्र लोकोक्तियों व मुहावरों का भी प्रयोग विचारणीय है जो ग्रामीण अंचल की विशेषताओं को ही उजागर करती है — जैसे - देह परीना, खेत की मुली उखाड़े न उखाड़ना, खूंटा पकड़ना, पानी का दगा उतरना, गाज गिरना, अंगार दगना, बात के बताशे फोड़ना, शिकार के वक्त कुतिया दगासी, चीटियाँ काटना, कौड़िला छाप इन्साफ, जिसे समझे थे कमीस वो भसाकू निकला इत्यादि।

इस लोकोक्तियों व मुहावरों ने इस कृति की विशेषताओं को और अधिक चटकीलापन प्रदान किया है।

<u>शैली वैविध्य : फिल्मी गीत शैली का प्रयोग :-</u>

"राग-दरबारी" की शिल्प विधान की गरिमा का दर्शन उस प्रसंग में भी होता है जहाँ लेखक ने फिल्मी गीत शैली का सुन्दर प्रयोग किया है। लेखक एकाद स्थलों में फिल्मी गीतों को पत्र लेखन की शैली के रूप में ग्रहण किया है।

इसप्रकार से लेखक फिल्मों के बढ़ते हुए कुत्सित प्रभाव की ओर भी संकेत करना चाहता है। गयादीन की लड़की बेला के प्रेमपत्र का उद्धरण द्रष्टव्य है, —

" मेरी बदनामी हो रही है और तुम चुपचाप बैठे हो। तुम कब तक तड़पाओगे ? तड़पाओगे ? तड़पा लो, हम तड़प-तड़पकर भी तुम्हारे गीत गायेंगे। तुमसे जल्दी ही मिलना है। क्या तुम आज बताओगे क्योंकि आज तेरे बिना मेरा मन्दिर सुना है। अकेले है, चले आओ जहाँ हो तुम। लग जा गले से फिर ये हँसी रात हो न हो। यही है तमन्ना तेरे दर के सामने मेरी जान जाये, हाय। हम आस लगाये बैठे है। देखो, जी, मेरा दिल न तोडना। " [६]

कहीं-कहीं यथार्थ की झोंक में लेखक की वर्णनात्मक भाषा अश्लीलता की सीमा का संस्पर्श करने लगती है। लेखक ने अवधी बोली का भी सुन्दर प्रयोग किया है।

भाषा की दृष्टि से देखा जाय तो "राग-दरबारी" में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। लोक-भाषा का भी अवसरानुकुल प्रयोग है। प्रिंसिपल अपनी अवधी बोली लिए ख्यातनाम है। अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत आदि भाषाओं की छटा उपन्यास में विद्यमान है। फिल्मी गीत, उर्दू के शेर, मुहावरे, लोकोक्ति, संस्कृत के श्लोक आदि से भाषा को सौष्ठव प्राप्त हुआ है।

व्यंग्यात्मक शैली :-

सम्पूर्ण उपन्यास व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत है। किन्तु हास्य-व्यंग्य का लेखक ने इतना सहारा लिया है कि विषय की गम्भीरता और मार्मिकता को कहीं-कहीं ठेस पहुँची है। व्यंग्य के अतिरिक्त लेखकने प्रसंगानुरूप लोककथा शैली, आंचलिक शैली और विश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

"राग-दरबारी" उपन्यास में व्यंग्य :-

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" हिन्दी के व्यंग्य उपन्यासों में से एक है। "राग-दरबारी" हिन्दी के व्यंग्य उपन्यासों की प्रौढ़ व उदात्त अवस्थाजन्य चेतना का किर्तिस्तंभ है। सम्पूर्ण उपन्यास में किसी पात्र पर व्यंग्य नहीं किया गया है और न किसी विशेष समस्या को ही मजाक का लक्ष्य बनाया गया है बल्की संपूर्ण देश ही उनके व्यंग्य का आलम्बन है। "राग-दरबारी" की राग में व्यंग्य का आरोह-अवरोह है जो पुरे पाठकों को विचारोत्तेजना में बहा देने की अपूर्व क्षमता रखता है। "राग-दरबारी" की व्यंग्य-चेतना सहस्त्रोमुखी है और एक जगह पर खड़ी होकर चारों दिशा में व्यंग्य का अस्त्र का संधान करती है।

श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य-प्रतिभा का चमत्कार न तो फिल्मी गीत शैली में है और न सर्फरी बोली में बल्कि उनके व्यंग्यकार हृदय का परिचय शिवपालगंज किसी गाँव विशेष का नाम नहीं है बल्कि उस देश का नाम है जिसे विश्व के मानचित्र पर भारत की संज्ञा प्रदान की जाती है। "राग-दरबारी" एक विशिष्ट व्यंग्यात्मक रचना है। आज तक के सभी उपन्यासों की परम्पराजन्य लीक से हटकर असमानी दृष्टि से लिखी गयी यह समस्त विसंगतियों की उद्घाटक रचना है। संपूर्ण उपन्यास में व्यंग्यात्मक शैली है। ग्रामीण परिवेश का उभरा हुआ रूप जिसमें कोई नैतिकता, मूल्य, आदर्श, आस्था, सामाजिक सम्बन्ध, आन्तरिक मानवीय पीड़ा और सांस्कृतिक चेतना नहीं है। जो शिवपालगंज के माध्यम से प्रकट होता है, लेखक की तटस्थ दृष्टि का परिचायक है।

"राग-दरबारी" का व्यंग्य-फलक अत्यन्त ही विस्तृत है। सम्पूर्ण देश की समस्याओं का इतना यथार्थ और प्रभावशाली चित्रण इसके पूर्व उपन्यासों में अनुपलब्ध है। इस दृष्टि से यह कालजयी रचना है। मानवीय विवशता, अन्याय, अमानुषिकता, भ्रष्टाचार, पुंजीवादी प्रभाव से उत्पन्न मानवीय सम्बन्धों का खोखलापन नैराश्य, संस्कारहीनता तथा मूल्य संक्रमण "राग-दरबारी" की व्यंग्य-व्यंजना के प्रमुख लक्ष्य रहे है।

श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" में उक्त समसामायिक समस्याओं पर व्यंग्य किया है। वह परिस्थितियाँ निम्नलिखित है उनकी व्यंग्य-व्यंजना के लक्ष्य निम्नलिखित है, --

१) राजनीतिक परिवेश :-

"राग-दरबारी" की व्यंग्य-व्यंजना में सर्वप्रमुख लक्ष्य स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण परिवेश की राजनीतिक स्थितियों पर केंद्रित है। स्वतंत्रतापूर्व देश की राजनीति में जो त्याग और निष्काम कर्मयोग की भावना थी वह आजादी प्राप्त लेने के बाद सत्ता-प्राप्ति की प्रतिस्पर्धा में लुप्त हो गई। आज की राजनीति विशुध्द स्वार्थपरायन और अवसरवादी मनोवृत्ति का कार्यक्षेत्र रह गया है।

"राग-दरबारी" के वैद्यजी ऐसे ही अवसरवादी नेता है, जो परतंत्रता युग में अंग्रेजो के भक्त थे और आजादी के बाद देशी अधिकारियों के अटल भक्त है। इस भक्ति का ही परिणाम है कि वे शिवपालगंज के एकछत्र नेता है। आज की नेताओं की तरह वैद्यजी यह भी मानते है कि आज का युवा वर्ग निकम्मा है और देशसेवा करने के लिए उन्हें इस बुढ़ापे में भी कालेज का मैनेजर और को-आपरेटिव युनियन का मैनेजिंग डाइरेक्टर का पद लाभ ग्रहण करना पड़ता है।

"राग-दरबारी" के एक नेतानुमा महापुरुष इसीलिए बेचैन हो जाते हैं कि उन्होंने पिछले अड़तलीस घंटो में कहीं भाषण नहीं दिया था। देश की कृषि की उन्नती में उन्हें अपने व्याख्यानों का चमत्कार ही दर्षित होता है। उन्हें इस बात का सन्तोष होता है कि उनके व्याख्यानों के कारण किसान प्रगतीशील हो रहे है। नारेबाजी का भी सहारा लेता है। इसी के माध्यम से अपना कार्य चलाते रहते है और जनता इनकी झाँसा-पट्टी में आती रहती है।

चुनाव में भी खोखले बाजी का सहारा लिया गया है। पंचायत व्यवस्था का भ्रष्टाचार का भी लेखक ने यहाँ पर्दाफाश किया है। रिश्वतखोरी सरकारी अधिकारियों से काम करने की अचुक पध्दती बनती जा रही है। लंगड जिंदगीभर बिना रिश्वत दिए कागजातों की नक्कल पाने की कोशिश करता रहा

और हार गया। अदालत, कचहरी, थाने में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है।

इसप्रकार शुक्ल जी ने सम्प्रति राजनीतिक क्षेत्र के विस्तृत वाङ्:मय को अपने व्यंग्यरूप का लक्ष्य बनाया है।

२) सामाजिक परिवेश :-

"राग-दरबारी" के माध्यम से आधुनिक ग्रामीण-चेतना का सामाजिक परिवेश अत्यंन्त ही भलीभाँति उभरकर सामने आता है। सामाजिक जीवन की टूटती हुई मूल्यवत्ता की अनुभवजन्य गाथा "राग-दरबारी" में अत्यन्त ही प्रभावशाली रूप में व्यंजित हुई है। सामाजिकता का खण्डन और नैतिकता निरन्तर टूट रही है। पारस्परिक वैमनस्य और शत्रुता ने प्रेम और सौहार्द क स्थान ले लिया है। भौतिकता ने जीवन की सामुहिकता को तोड़ने का जैसे संकल्प ही कर लिया है। "राग-दरबारी" इस संदर्भ में अत्यंन्त ही तीखा व्यंग्य है।

"राग-दरबारी" शिवपालगंज गाँव का ही नहीं भारत की सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था की विडम्बनाओंपर करारा व्यंग्य है। जिस ग्रामीण समाज ने विडम्बनाओं को ही नियति मान लिया है, उसकी सफल व्यंजना "राग-दरबारी" में है। बद्री, छोटे पहलवान, रूप्पन, जोगनाथ, सनीचर जैसे व्यक्तित्व आज की विघटित नैतिकता का प्रतिमान है। शोध-प्रज्ञ रंगनाथ सम्पूर्ण विसंगतियों की यातना को मन ही मन झेलता रहता है और अपनी असमाथ्यजन्य तटस्थता की पीड़ा में डुबा रहता है।

सामाजिक विघटन के इस युग में परिवारिक सम्बन्धों में अनैतिकता, तणाव और बिखराव हो रहा है। आर्थिक विपन्नताओंने परिवारों को बुरी तरह से घेर लिया है। "राग-दरबारी" की सामाजिक चेतना में मानवता और इन्सानियत के अर्थापकर्ष के सम्बन्ध में तीखे और गहरे व्यंग्य किये गये है।

"राग-दरबारी" में सामाजिक स्थिति का बोध करते हुए दिखाया गया है कि - आज का युवा वर्ग पथभ्रष्ट व दिशाहिन होकर खोखले नारों के कुहासे में

भटक रहा है। स्वार्थपरायण राजनीतियोंने अपनी सत्ता की अखण्डता की रक्षा के लिए युवा शक्ति का भरपूर प्रयोग किया।

इसप्रकार "राग-दरबारी" में सामाजिक परिवेश के विविध पहलुओंपर व्यंग्यात्मक चित्रण मिलता है।

३) आर्थिक परिवेश :-

"राग-दरबारी" इस उपन्यास में आर्थिक परिवेश की विसंगतियों को मुखरित करने का भी लक्ष्य रहा है। आज के युग में जीवन की अधिकांश समस्याओंके उत्स में आर्थिक परिस्थितियों का भी योगदान है। उच्चवर्ग की पूँजीपरस्त मनोवृत्तिने मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय समाज को निचोड़ डाला है। "राग-दरबारी" मे शिवपालगंज के सहकारी भण्डार का सुपरवाइजर दो हजार रुपये का अनाज लेकर भाग गया। वैद्यजी की मान्यता है कि वह घाटा भी सरकार को पुरा करना चाहिए। योजनाओं के दूषित क्रियान्वयन और व्यक्तिगत क्षुद्र स्वार्थों के कारण देश में महँगाई बढ़ती रही। देश में आवश्यक वस्तुओं वे खाद्यान्नों में भयानक मूल्य वृध्दि होती गई।

लाइन! शिवपालगंज में जनता को पढ़ाया गया था। लाईन प्रगति का नाम है। यही तरक्की है। हर काम लाइन से करो। लाइन से पेड़ लगाओ और उन्हें लाइन से सुख जाने दो। यही उन्नती है। इसप्रकार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की प्रगति जिस गति से सरकारी कागजों में होती रही और उसी रफ्तार से उनका अधःपतन भी द्रुत गति से होता रहा। देहातों का पिछड़ापन वैसा ही रहा। अशिक्षा, अंधविश्वास, कुरीतियों और अधकचरे ज्ञान के कारण स्वार्थों की राजनीति और घृणित आर्थिक आकांक्षाओं का एकछत्र साम्राज्य बढ़ता गया, लेकिन दिखावे के तौरपर देश का "सिम्बालिक माडनीइजेशन" होता रहा।

इसतरह से देश की प्रगति का आर्थिक पक्ष भारी औद्योगिकरण के चक्कर में देहाती व्यवस्था को विस्मृत कर बैठा और गाँवो की प्रगति जहाँ की तहाँ स्थिर हो गई। "राग-दरबारी" में पुरे भारत देश की तथा शिवपालगंज की

आर्थिक परिवेश को व्यंग्य के माध्यम के द्वारा शुक्ल जी ने प्रकट की है।

४) शिक्षा-प्रणाली :-

"राग-दरबारी" की विषयवस्तु या व्यंग्य फलक पर वर्तमान शिक्षा-प्रणाली सम्बन्ध प्रत्येक असंगतियों का खुलकर व विस्तार से प्रस्तुतीकरण हुआ है। किसी भी राष्ट्र की बौध्दिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास में राष्ट्रीय भावना और शिक्षण व्यवस्था का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा-केंद्रो में ही राष्ट्र की भावी पीढ़ी की मानसिक भूमिका निर्मित होती है। बौध्दिक चेतना का विकास और विवेक का जागरण शिक्षा से ही सम्भव है।

"राग-दरबारी" में छंगामल विद्यालय इस क्रूर यथार्थ का प्रतिक है। भौतिकवाद की चरम विकसित सभ्यता की भूमि पर पढ़नेवाले छात्र सिर्फ इमारत के आधार पर ही कह सकते थे कि हम शान्ति निकेतन से भी आगे है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अत्यन्त ही दोषपूर्ण बन चुकी है। शिक्षा पध्दति का सुनिश्चित मानदण्ड स्थापित करने में हम सर्वथा असफल रहे है। दस बार शिक्षा पध्दति में क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए प्रस्तुत किये गये नये-नये सुझाओं की भीड़ को देखकर ऐसा प्रतित होता है मानो, "वर्तमान शिक्षा पध्दति रास्ते में पड़ी हुई कुत्तिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।" इस क्षेत्र की विडम्बना यह है कि सभी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए भी विष्टपोषित व पुनरावृत्तिवाली शिक्षा के इतिहास का बोझ लटकाए गर्दन हिला रहे हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली सर्वथा अनुपयुक्त और निकम्मी सिध्द हो रही है। श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" में शिक्षा के प्राथमिक स्तर से विश्व-विद्यालयी स्तर तक की अवस्था को यथार्थ भाव से प्रस्तुत करते हुए उसकी न्यूनताओं की बखिया उधेड़ दी है।

"राग-दरबारी" में दिखाया गया है कि, वर्तमान अध्यापकों की मनोवृत्ति का दोष भी कम नहीं है। इसप्रकार की भ्रष्ट और स्वार्थपरायन मनोवृत्तिवाले हजारों अध्यापकों के हाथ में देश का भविष्य दुर्गतिग्रस्त बनता चला

जा रहा है। एक तरफ अध्यापकों में चारित्रिक विघटन और कर्तव्यों से फिसलने की प्रवृत्ति है। दूसरी तरफ शोषणवादी, निरंकुश और उच्छृंखल प्रिंसिपल वर्ग है जो अफसरवादी मनोवृत्ति का पर्याय है। ऐसे शिक्षण संस्थाओं में मैनेजर का वरदान प्राप्त प्रिंसिपल अत्याचारों और उत्पीड़न का मूर्त रूप बन जाता है, परिणामस्वरूप शिवपालगंज के छंगामल विद्यालय में और सभी कुछ होता है, सिर्फ पढ़ाई नहीं होती। अध्यापक वर्ग की ऐसी कुत्सित और घृणित मनोवृत्ति के कारण छात्र वर्ग भी प्रतिदिन अनुशासनहीन, हिंसक और उच्छृंखल होता जा रहा है। अनैतिक और अनुत्तरदायित्वपूर्ण कार्यवाही करने में उन्हें किसी प्रकार का कोई संकोच अनुभव नहीं होता।

अतः श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित "राग-दरबारी" का छंगामल विद्यालय न केवल शिवपालगंज का ही बल्कि सम्पूर्ण भारत भर में फैले प्राथमिक शालाओं से विश्वविद्यालयों और शोध कार्यों तक का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। शिक्षणक्षेत्र की विकृतियों का बृहदकोश "राग-दरबारी" है।

निष्कर्ष :-

श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित "राग-दरबारी" एक सफल व्यंग्यप्रधान रचना है। शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" में विविध सामाजिक विषमताओंपर करारा व्यंग्य किया है। भारतीय समाज में राजनीति परिवेश, सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश तथा शैक्षणिक परिवेश को लेकर उनमें व्याप्त विषमताओं का पर्दाफाश श्रीलाल शुक्ल जी ने किया है।

भारतीय जीवन में व्याप्त विसंगतियोंपर तेज रोशनी डालने में यह "ढब" उपयोगी सिध्द हुआ है। श्रीलाल शुक्ल जी के व्यंग्य का यह दायरा बहुत व्यापक है, जिसमें अंधविश्वासों, रूढ़ियों, चुनावी तिकड़मों, सम्पादकीय सौदा-बाजीयों, बुध्दिजिवियों के तर्क-वितर्क, साहित्यकारों की बोल बाजियों, शोधार्थीयों एवं आचार्यों की सांठ-गांठों तथा व्यापारियों एवं सरकारी अफसरों

की मिली भात आदि सभी का समावेश किया गया है।

इसप्रकार श्रीलाल शुक्ल जी का व्यंग्य-विद्वान पाठक के अधरों पर मुस्कान लाकर ही रह जाता है, उसके हृदय में तड़प नहीं पैदा कर पाता है। वचन वक्रता के द्वारा चमत्कार उत्पन्न करने की लालसा के कारण व्यंग्य की तीव्रता दब जाती है। विशद तथा सर्वांगीण अनुभव होते हुए भी लेखक का वाग्वैदग्ध रीतिवादी बनकर उपन्यास की बोझिल तथा व्यंग्यलीला में बदल देता ह है। अतः "राग-दरबारी" एक शुध्द व्यंग्यात्मक रचना है।

श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" उपन्यास का भाषा सौष्ठव लेखक की उर्वर प्रतिभा की व्यंग्य-व्यंजना के अत्युत्तम प्रमाण है। उपन्यास की भाषा के बारे में डॉ॰ रामदरश मिश्र ने कहा है, —

" भाषा ऊपर से ओढ़ी हुई चीज नहीं होती, वह स्थान विशेष के लोगों के संस्कारों और अनुभूति के साथ अनिवार्य भाव से संपृक्त होती है। अतः कुछ शब्द और मुहावरे इस प्रकार वहाँ के जीवन सत्यों के साथ जुड़े होते है, कि वे सत्य विशेष के साथ स्वतः लगे हुए चले आते है। उनका अनुवाद होता है परंतु अनुवाद भावों, अनुभूतियों या सत्यों की मूल गंध को वह करने में असमर्थ होता है। " ७

"राग-दरबारी" की रागमें व्यंग्य का आरोह-अवरोह है जो पुरे पाठकों को विचारोत्तेजना में बहा देने की अपूर्व क्षमता रखता है। "राग-दरबारी" की व्यंग्य-चेतना सहस्त्रोमुखी है और एक जगह पर खड़ी होकर चारों दिशामें व्यंग्य-अस्त्र का संधान करती है। "राग-दरबारी" हिन्दी के व्यंग्य उपन्यासों की प्रौढ़ व उदात्त अवस्थाजन्य चेतना का कीर्तिस्तंभ है। सम्पूर्ण उपन्यास में किसी पात्र पर व्यंग्य नहीं किया गया है और न किसी विशेष समस्या को ही मजाक का लक्ष्य बनाया गया है बल्की संपूर्ण देश ही उनके व्यंग्य का आलम्बन है।

श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य प्रतिभा का चमत्कार न तो फिल्मी गीत शैली में है और न सर्फरी बोली में बल्कि उनके व्यंग्यकार हृदय का परिचय शिवपालगंज

और उसमें बसनेवाले लोगों की विविध गतिविधियों को उद्घाटित करने में है। सम्पूर्ण उपन्यास में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है।

भाषा का ऐसा निहायत प्रयोग जिसमें बार-बार व्यंग्य उभरता है, ऐसी कलागत निस्संगता और ऐसा मूल्यहीन व्यवहार केवल "राग-दरबारी" में ही प्रस्तुत है। "राग-दरबारी" के पारे-पारे में व्यंग्य रचा हुआ है।

अतः श्रीलाल शुक्ल जी कृत "राग-दरबारी" में भाषा-शैली का प्रयोग विषयवस्तु और पात्रों के अनुकूल हुआ है।

संदर्भ सूची :-

१) डॉ॰ ज्ञानचन्द गुप्त — "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना" - पृष्ठ २७९।

२) श्रीलाल शुक्ल -- "राग-दरबारी" - पृष्ठ १५।

३) -- वही -- - पृष्ठ २३।

४) -- वही -- - पृष्ठ २३।

५) -- वही -- - पृष्ठ ४०५।

६) -- वही -- - पृष्ठ २७३।

७) डॉ॰ रामदरश मिश्र — "हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा" - पृष्ठ १९२।

.....